RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper
Available online at: www.rhimrj.com

भास के नाटक प्रतिज्ञायौगन्धरायण में वीर रस तथा उसका नाटकीयता पर प्रभाव

डॉ. मनुभाई एस. प्रजापति
आर्ट्स, सायंस एन्ड कोमर्स कोलेज, पिलवाई

भारतीय काव्य -शास्त्रियों ने रूपक के भेदक तत्व के रूप में वस्तु,नेता और रस को प्रतिष्ठित किया है |[1] कोई भी रूपक इन तीन तत्वों के कलात्मक समन्वय का ही परिणाम होता है | वस्तु एवं नेता नाटक को स्थापित करते हैं, परन्तु रस के अभाव में वह मात्र चित्र काव्य की ही उपाधि प्राप्त कर पाता है | यही कारण है कि प्रायः सभी वरेण्य आचार्यो ने एक स्वर से रस की सर्वातिशायितास्वीकार की है |

भरत ने विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भाव इन तीन मूलभूत तत्वों को रस-सामग्री के रूप में स्वीकार किया है |[2]

अभिनवगुप्त ने तो यही लिखा की - एतादुपसंहरतिः तस्मादिति | नात्यात्समुदायरुपाद्रसाः | यदि वा नाट्यमेव रस | रस समुदायो हि नाट्यम् | नाट्य एव च रसाः | काव्ये अपि नाट्यमान एव रसः | काव्यार्थ विषये हि प्रत्यक्षकल्पसंवेदनोदये रसोदये इत्युपाध्यायाः |[3]

आचार्य भरत ने तो रस तत्व की सर्वोत्कृष्टता का स्पष्ट शब्दों में उद्घोष किया - “न हि रसा द्रुते कश्चिदर्थः प्रवर्तते” [4]

प्रतिज्ञायौगन्धरायण बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न महाकवि भास के विलक्षण प्रतिभा से मण्डित उच्च कोटि का एक रूपक है | इसमें महासेन के द्वारा बन्दी बनाये हुए वत्सराज उदयन द्वारा अवन्तिराजपुत्री वासवदत्ता के अपहरण की अंशतः प्रख्यात[५] कथा वर्णित है, जिसमें ये दोनों पात्र मंच पर नहीं आते | इसमें पाँचों संधियों, सभी अर्थ प्रकृतियाँ और कार्यवस्थायें प्राप्त होती हैं | कथावस्तु अर्ध ऐतिहासिक तथा कल्पना की उपज है |[६] नाटक का प्रमुख पात्र या नायक यौगन्धरायण नाट्यशास्त्र की दृष्टि में धीर प्रशान्त कोटि का है | चार अंकों वाले इस रूपक का उद्देश्य यौगन्धरायण की प्रतिज्ञा की पूर्ति है, जो सफल होती है तथा रूपक सुखान्त होता है |

यहाँ नायक यौगन्धरायण की तीन प्रतिज्ञायें [७] उसके अदम्य उत्साह तथा नीतिपूर्ण बुद्धिमता की परिचायक हैं | इसका आश्रय उत्तम पात्र यौगन्धरायण है | महासेन जीतने योग्य व्यक्ति आलम्बन विभाव हैं तथा यौगन्धरायण की कार्यकुशलता, धैर्य, शौर्य, प्रताप, विक्रम, बल, अध्यवसाय, विनय उद्दीपन विभाव हैं | उदयन को ससम्मान छुड़ा लाने के लिए कूटनीतिपूर्ण प्रज्ञा तथा छद्मवेशधारी गुप्तचर अनुभाव हैं, जबकि गति, गर्व, स्मृति, मति आदि संचारी भाव की कोटि में स्थान पाते हैं | यही प्रसंग पूरे रूपक को आप्यायित रखता है, फलस्वरूप वीर रस का अंगीत्व प्रतिज्ञायौगन्धरायण में निर्विवाद स्वीकार्य है |

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

परन्तु आचार्य भरत [८], धनंजय[९], विश्वनाथ[१०], पण्डितराज जगन्नाथ[११], प्रभृति शास्त्रकारों ने वीर रस के जिन अवान्तर भेदों को मान्यता दी है उसमें प्रतिज्ञायौगन्धरायण का नायक किस प्रकार का वीर है ? यहाँ किस प्रकार के वीर रस के अंगित्व की स्थापना हुई है ? यह प्रश्न विचारणीय बन जाता है | प्रतिज्ञायौगन्धरायण में किसी तरह के दान या दया की महत्ता नहीं है इसलिए इसमें न तो दानवीर की स्थिति मानी जा सकती है और न दयावीर की | यौगन्धरायण को युद्धवीर भी नहीं माना जा सकता, क्योंकि सम्पूर्ण रूपक के सिर्फ चतुर्थ अंक में एक सामान्य भट उसे युद्ध में संलग्न होने की सूचना मात्र देता है - शृण्वन्त्वार्या - **आर्य यौगन्धरायेणनासिद्वितियेनाक्षौहिण्या अग्रवेगो मुहूर्त धारितः | विजयसुन्दरस्य हस्तिनो दन्तातचोदितोडसिर्विपन्नः | असिदोषेण गृहीतो, न पुरुषदोषेण ||** [१२] नाटकान्त में युद्ध सम्बन्धी इस छोटी - सी सूचना के आधार पर यौगन्धरायण को युद्धवीर स्वीकार करना उपयुक्त तथा तर्कसंग्रत प्रतीत नहीं होता | यौगन्धरायण को धर्मवीर भी नहीं माना जा सकता, क्योंकि विभिन्न नाटकों में युद्धिष्ठिरादि को जिन गुणों से युक्त चित्रित कर धर्मवीर माना गया है वह भी यौगन्धरायण में नहीं मिलता | यदि बन्दी उदयन को छुडाना यौगन्धरायण का धर्म माना जाय तो प्रद्योत द्वारा अपनी पुत्री के लिए उसका अपहरण भी धर्म मानना पड़ेगा | लेकिन वस्तुतः यह स्वार्थ के खींचातानी है न कि धर्मवीरता |

पुनः पण्डितराज जगन्नाथ ने जिन अन्य चार वीरों का निरूपण किया है, उसमें भी कोई वीर यौगन्धरायण सिद्ध नहीं होता | पाण्डित्य के लिए जिन गुणों का होना अपेक्षित है, उन गुणों से यह युक्त नहीं है | युद्धवीर के समान इसे बलवीर भी नहीं माना जा सकता | इसी तरह यौगन्धरायण की क्षमाशीलता तथा सत्यवादिता को भी कवि ने प्रश्रय नहीं दिया है, अतः यह क्षमावीर या सत्यवीर भी नहीं माना जा सकता |

ऐसी स्थिति में इस रूपक का नायक वीर रस के किस प्रभेद को अलंकृत करता है ? यह प्रश्न विचारणीय बन जाता है | पण्डितराज जगन्नाथ ने उपर्युक्त भेदों के अतिरिक्त अन्य भेदों को भी स्वीकार करने का अभिमत प्रकट किया है | इसलिए प्रतिज्ञायौगन्धरायण में भी वीर रस के किसी अन्य भेद की ही स्थिति होनी चाहिए, जिसके विषय में शास्त्रकार विपश्चितों ने एवं सहृदय आलोचकों ने आज तक स्पष्ट रूप से कुछ नहीं लिखा है |

उपस्थापित कथावस्तु का अवगाहन करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि नायक यौगन्धरायण उत्तम कोटि का नीतिज्ञ है | वह अहर्निश अपने बुद्धिबल द्वारा उदयन की रक्षा, उसे सम्मान वापस लाने की योजना में सचेष्ट दीख पड़ता है | अपने बुद्धिकौशल पर न सिर्फ उसे पूर्णत: विश्वास है, बल्कि उदयन, उनकी राजमाता, महासेन प्रद्योत तथा उनके मन्त्री शालंकाय को भी पूरा भरोसा है | छल द्वारा बन्दी उदयन हंसके विदा होने के समय कहता है - **गच्छ योगन्ध**[१३] --- स्पष्ट है उदयन को यौगन्धरायण पर पूर्णत: विश्वास है कि वह उसे अवश्य मुक्ति दिलाएगा | फिर राजमाता की उक्ति **-'आनयतु में पुत्रक इति**'[१४] भी इसी बात की पुष्टि करती है | उदयन के बन्दी हो जाने पर भी महासेन को विश्वास नहीं हो पाता | वे कंचुकी की बातों पर आश्चर्य करते हुए कहते हैं -

"उदयसेन के पकड़े जाने वाली तुम्हारी इस बात को मैं उसी प्रकार नहीं स्वीकार कर सकता, जिस प्रकार मन्दराचल पर्वत हाथ से घुमाया गया यह बात अविश्वसनीय है | शत्रु भी युद्धक्षेत्र में जिसके बल एवं

पराक्रम की प्रशंसा करते हैं, उसके मन्त्री यौगन्धरायण की कूटनीति हमारे कर्णकुहरों में आज भी गूंज रही हैं |"[१५]

ये सारे तथ्य यौगन्धरायण की बुद्धिमता के पोषक हैं | यही कारण है कि अपने अदम्य उत्साह से उत्साहित होकर तीन बार प्रतिज्ञा करता हैं कि 'यदि पकड़े गये स्वामी को मुक्त न कर दूँ तो मैं यौगन्धरायण नहीं |' और इस प्रयास में वह अन्ततः सफल भी होता है | यहाँ महासेन आदि आलम्बन विभाव, उदयन के प्रति राजभक्ति उद्दीपन विभाव, प्रतिपक्षियों के नाश के लिए अहर्निश प्रयत्न अनुभाव तथा यौगन्धरायण के वाक्यों में कहीं धृति,कहीं मति, कहीं गर्व, कहीं स्मृति आदि संचारी भावों के स्पष्टतः दर्शन होते हैं, जिससे वीर रस की पुष्टि होती है | यहाँ दान, धर्म, दया, युद्ध, पाण्डित्य, सत्य, बल, क्षमा सबों से भिन्न तत्व यौगन्धरायण में विद्यमान है और वह तत्व है उसका बुद्धितत्व या नीतितत्व | अपने इसी बुद्धि या नीति के बल पर यौगन्धरायण अपने प्रतिज्ञार्णव को पार करता है |

एसी स्थिति में हमें यौगन्धरायण को नीति वीर मानना अधिक उपयुक्त तथा तर्कसंगत प्रतीत होता है | वस्तुतः प्रतिज्ञायौगन्धरायण में नीति -वीर नामक रस ही इसकी आत्मा के रूप में चित्रित हुआ है, अतः यहाँ नीति वीर रस का अंगित्व स्वीकार किया जा सकता है |

प्रतिज्ञायौगन्धरायण में यौगन्धरायण की प्रतिज्ञा, गुप्तचरों द्वारा महासेन की राजधानी में प्रवेश कर उदयन के इर्द -गिर्द छा जाना, समयानुसार मन्त्रणा, परिश्थिति के अनुरूप कार्य करना आदि ऐसे प्रसंग हैं जिनकी स्पष्ट छाप मुद्राराक्षस पर देखी जा सकती है |

प्रतिज्ञायौगन्धरायण के प्रथम अंक में शुरू से ही यौगन्धरायण उदयन की रक्षा के प्रति कार्यशील है | उसे प्रद्योत के छद्म कार्य की सूचना है | वह राजा को सूचित करने के लिए उद्यत है, परन्तु उदयन पूर्वनिर्धारित तिथि से पूर्व ही शिकार खेलने निकल जाता है | इसे यौगन्धरायण भाग्य का फल बताता है तथा अपनी राजनैतिक पटुता से युक्त कार्यो द्वारा भाग्य की प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदल यह सिद्ध कर देता है कि कर्म ही प्रधान है | यहाँ गीता की **'कर्मण्येवाधिकारस्ते माफलेषु कदाचन'** पंक्ति बरबस याद आ जाती है | यौगन्धरायण फलप्राप्ति पर्यन्त अपनी राजनैतिक गतिविधियों में संलग्न रहता है | उसके तीन अंकों में स्वयं रंगमंच पर विद्यमान होने से नीति वीर रस की पुष्टि तो होती ही है, द्वितीय अंक में महासेन भी उसकी बुद्धिमता के कायल प्रतीत होते हैं | स्पष्टतः पूरे रूपक में यौगन्धरायण की नीति हावी रही है | इस तरह यह स्पष्ट होता है कि परम्परावादी लीक तोड़ना यदि उनको साध्य रहा है तो रस तत्व साधन |

नाटकीयता पर प्रभाव की दृष्टि से नीति वीर रस की स्थापना अत्यन्त उत्कृष्ट बन पड़ी है | नाटक के शुरू से अन्त तक यौगन्धरायण अपने नीतिपूर्ण कार्यो के क्रियान्वयन में तत्पर दिखायी पड़ता है | पद के अनुरूप उसकी कार्यकुशलता स्वाभाविक है | सभी पात्र उसकी बुद्धि के कायल हैं | यौगन्धरायण के द्वारा क्रियान्वित कोई भी कार्य नाटकीयता के प्रतिकूल नहीं जाता | तृतीय अंक में विदूषक तथा उन्मतक का वार्तालाप प्रत्यक्षतः हास्य का अभिधायक प्रतीत होता है, किन्तु वस्तुतः वहाँ उनकी भाषा विशेष संकेतों के अनुरूप है | मोदक मृदुस्वभाव वाले उदयन का प्रतीक है | उन्मत्क वेशधारी यौगन्धरायण महासेन का

प्रतीक है, जिसके लिए मोदक रूपी उदयन अब मात्र दर्शन या स्मरण की ही वस्तु रहने वाला है | उदयन को बन्दी बनाना महासेन की उन्मत्तता का ही द्योधक यौगन्धरायण मानता है | इस तरह पूरे कथानक में यौगन्धरायण की नीति फूलती फलती दिखाई पड़ती है | यौगन्धरायण की प्रतिज्ञायें उसके आत्मविश्वास की पूर्णता को स्पष्ट करती हैं | पूरे नाटक में कोई भी कार्य या कोई भी वाक्य नाटकीय भावधारा के प्रतिकूल नहीं जाता | इस तरह यह स्पष्ट होता है कि प्रतिज्ञायौगन्धरायण नाटक में नीति वीर रस का नाटकीय गत्यात्मक के पूर्णत: अनुकूल योगदान रहा है |

सन्दर्भ सूचि :

१. वस्तु नेता रसस्तेषांभेदकः | दश,१/१
२. विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पति: | ना.शा, पृ.२७२
३. ना.शा, पृ.२९०
४. ना.शा, पृ.२७२
५. कथासरित्सागर, २/३
६. भास - ए,एस.पी.अइय्यर कृत, पृ.२०३-२०४
७. प्रतिज्ञा, १/१६, ३/८-९
८. नाट्यशास्त्र, 6/७९
९. दशरूपक, ४/७२
१०. साहित्यदर्पण, ३/२२४
११. रसगंगाधर, पृ.१७४
१२. प्रतिज्ञा, ४/पृ. ११३ -११४
१३. वही, १/पृ.३४
१४. वही, पृ.३७
१५. वही, पृ.२/९

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved *ISSN:* 2349-7637 (Online)